Course --M.A ,Education,part -2

Paper -11th, Educational Administrative Practice

Prepared by -Dr Meena Kumari

Topic --Classical Management Theory (Scientific Management Theory-----continued)

पूर्व प्रतिष्ठित प्रबंधकीय सिद्धांत

1)प्रस्तावना --- प्रबंधकीय सिद्धांतों का इतिहास बहुत पुराना माना है ।भारत में कौटिल्य का अर्थशास्त्र अन्य प्रबंधकीय सिद्धांतों पर प्रकाश डालता है और आज भी इन सिद्धांतों को महत्व दिया जाता है। लगभग 5000 वर्ष पूर्व सुमेरियन सभ्यता के अंतर्गत मंदिरों की आय, पशुधन से प्राप्त आय तथा भूमि पर लगान इत्यादि के नियमों के प्रमाण मिले हैं। मिस्र तथा यूनानी सभ्यता के समय प्रबंधन में योजना निर्माण, नियंत्रण तथा अधिकारों के विकेंद्रीकरण की बात की गई है ।अतः यह साफ है कि प्रबंधन का इतिहास बहुत पुराना है ।वर्तमान आधुनिक युग में उदय लगभग उन्नीस सौ के आसपास माना जाता है ।1910 से लेकर 1935 के बीच का समय में नए-नए सिद्धांतों का जन्म हुआ जिसमें टेलर ,लूथर गुलिक, हेनरी फयोल तथा मैक्स वेबर का सिद्धांत उल्लेखनीय है।

2)वैज्ञानिक प्रबंधन का सिद्धांत --

फ्रेडरिक टेलर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत को ही वैज्ञानिक प्रबंधन सिद्धांत क नाम से जाता है। टेलर इंजीनियर थे उन्होंने प्रबंधन के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी पुस्तक प्रिंसिपल आफ मैनेजमेंट में किसी कार्य को सबसे अच्छे तरीके से किए जाने की क्रिया विधि को लिखा है जिसे उन्होंने वैज्ञानिक विधि का नाम दिया है। उन्होंने उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए 6 सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जिसे टेलरवाद के नाम से जाना जाता है।

टेलर के प्रबंधकीय सिद्धांत चार प्रमुख नियम पर आधारित है--

i. १) वैज्ञानिक प्रबंधन में अंगूठे का शासन के सिद्धांत को प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए!
ii. कामगारों को बड़ी सावधानी से चोर चुनाव किया जाना चाहिए फिर उन्हें प्रशिक्षित तथा उनके कार्य शैली को विकसित किया जाना चाहिए।
iii. प्रबंधकों को कामगारों के साथ सहयोग करना चाहिए ताकि वैज्ञानिक नियमों का पालन किया जा सके।
iv. प्रबंधकों और कामगारों में लगभग समान रूप से दायित्वों का विभाजन किया जाना चाहिए परंतु प्रबंधकों को निर्णय का अधिकार होना चाहिए।

इस प्रकार वैज्ञानिक प्रबंधन में कामगारों एवं प्रबंधकों के बीच समन्वय आवश्यक है। जिन साधनों से कुशलता प्राप्त की जाए उन साधनों का एक मानक स्तर होने चाहिए। इस वैज्ञानिक व्यवस्था के अंतर्गत उत्पादन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण का मूल्यांकन किया जाना चाहिए । यदि कहीं कोई बात किसी दोषपूर्ण हो तो उसे अलग कर देना चाहिए ताकि उसका उत्पादन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ सके ।इस प्रकार संगठन तथा प्रबंधन का मुख्य लक्ष्य अधिकाधिक उत्पादन था साथ ही उन साधनों का भी विश्लेषण करना था जिससे अधिक से अधिक उत्पादन

किया जा सके ।अर्थात इस सिद्धांत के अंतर्गत भौतिक तथा संगठन के हित की बात की गई है ।इसमें कामगारों के कल्याण की बातें नहीं है तथा उनके हित की बातें भी नहीं रखी गई है। इस संदर्भ में टेलर ने क 6 सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है जो निम्नवत है ---

1. समय के अध्ययन का सिद्धांत --- इस सिद्धांत के अंतर्गत उत्पादन में लगे समय की माप आवश्यक है तथा कार्य के लिए कामगारों को एक निश्चित अवधि दिया जाना भी अत्यावश्यक है क्योंकि टेलर का मानना था कि कामगार आलसी होते है!

2. आंशिक वृत्ति का सिद्धांत --- श्रमिकों का वेतन लाभांश से जुड़ा होना चाहिए यानि लाभांश कामगारों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगा जो लाभ पर आधारित होगा।

3. आयोजन एवं संपादन अलग-अलग रखने का सिद्धांत --- इस सिद्धांत के अंतर्गत प्रबंधन में आयोजन एवं संपादन को अलग-अलग रखने की बात की गई है। नियोजन का संपूर्ण दायित्व व्यवस्थापकों पर होनी चाहिए क्योंकि योजना निर्माण संगठन तथा प्रबंधन का एक मुख्य कार्य है।

4. अच्छे कार्य के लिए वैज्ञानिक विधियों का सिद्धांत-- इस सिद्धांत के अनुसार प्रबंधकों को कामगारों को यह दायित्व देना चाहिए कि कार्य संपादन के लिए कौन सी विधि अपनाएंगे ।अर्थात कामगारों की कार्य करने की विधि पहले से तय होनी चाहिए और इसको वैज्ञानिक विधि का नाम दिया ।व्यवस्था को को अधिकाधिक उत्पादन देने वाली विधियों तथा श्रमिकों से कार्य लेना चाहिए ।सर्वाधिक योग्यताधारी को पर्यवेक्षक एवं कार्य का उत्तरदाई बनाना चाहिए।

5. व्यवस्था नियंत्रण का सिद्धांत --- व्यवस्थापक को प्रशिक्षित होने चाहिए। उन्हें संगठन की व्यवस्था करना तथा अधिक उत्पादन की विधियों का ज्ञान होना चाहिए।

6. व्यवहारिक प्रबंधन का सिद्धांत --- किसी भी औद्योगिक संस्थान में अधिक उत्पादन के लिए सैनिक अनुशासन की आवश्यकता होती है ।अनुशासनहीनता का उत्पादन और लाभांश पर विपरीत प्रभाव पड़ता है ।अतः संगठन में पूर्ण रूप से कार्य विभाजन होना चाहिए और सभी कामगारों को अपने उत्तरदायित्व के प्रति समर्पित होना चाहिए ।

टेलर के उपर्युक्त सिद्धांतों के विश्लेषण से यह पता चलता है की औद्योगिकरण के प्रारंभिक काल में तो यह प्रासंगिक था परंतु यह अधिकाधिक उत्पादन का सिद्धांत आज की दृष्टि में उतना प्रासंगिक नहीं है। इस दृष्टिकोण से एक दोष बहुत बड़ा है कि औद्योगिक विधियों में यह है कि जब कोई कामगार केवल किसी वस्तु को एक ही भाग तैयार करता है तो उसे संतोष उस समय नहीं होता है जब तक कि पूरा ना हो जाए । टेलर को यह विश्वास था कि प्रत्येक कामगार स्वभाव से आलसी होता है जो पूर्णता सही नहीं है। उन्होंने भौतिक वस्तुओं के कई रूप में लाभांश देने का या प्रलोभन देने की बात की है जिससे लोग प्रेरित हो सके। परंतु टेलर ने मनोवैज्ञानिक पहलुओं जैसे उत्प्रेरणा ,परस्पर संबंध ,संवेगात्मक मूल्यों की उपेक्षा की है ।वह भूल गए कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है केवल पैसा ही नहीं कार्य के प्रति संतोष तथा स्वाभिमान भी उन्हें कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए प्रेरित करता है। फिर भी साइंटिफिक तथा वैज्ञानिक विधि प्रबंधन की सर्वोत्तम तथा प्रासंगिक विधि है ।अर्थात कार्य को कैसे और कितने समय में किया जाना चाहिए यह बहुत महत्वपूर्ण है और आज के दिन में भी प्रासंगिक है।